

हमारे लोकप्रिय प्रकाशन

स्वयं करो - श्रृंखला

1. पत्तियों का चिड़ियाघर (हिन्दी एवं अंग्रेजी) 10 रुपये
अरविंद गुप्ता
2. खेल खिलौने (हिन्दी एवं अंग्रेजी) 15 रुपये
अरविंद गुप्ता एवं रमेश कोठारी
3. पम्प ही पम्प (हिन्दी एवं अंग्रेजी) 10 रुपये
सुरेश वैद्यराजन एवं अरविंद गुप्ता

एनसीएसटीसी बाल - श्रृंखला

4. जानो और बूझो (हिन्दी) 5 रुपये
बलदेव राज दावर

लोक माध्यमों द्वारा विज्ञान - श्रृंखला

5. गाएँ गाना, खेलें खेल (हिन्दी) 10 रुपये
6. Let's Sing & Play (English) 10 रुपये

विविधा

7. विज्ञान विधि (हिन्दी एवं अंग्रेजी) 25 रुपये

हमारे लोकप्रिय प्रकाशन प्राप्त करने के लिए कृपया मूल्य की राशि, "विज्ञान प्रसार" नई दिल्ली को देय डिमांड ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते पर भेजें या संपर्क करें। हर किताब की एक प्रति बुक पोस्ट या साधारण डाक से मंगाने के लिए कृपया क्रमशः दो रुपए तथा पाँच रुपए और रजिस्ट्री (यदि चाहें) के लिए सात रुपए अलग से जोड़ें। 10 प्रतियों के रजिस्टर्ड पार्सल के लिए अलग से डाक चार्ज 10 रुपए मूल्य में जोड़ें।

लेखाधिकारी

विज्ञान प्रसार

द्वारा - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार

टैकनॉलोजी भवन, नया महरौली मार्ग

नई दिल्ली - 110 016

विज्ञान प्रसार नवसाक्षरता - श्रृंखला

कहानी माप-तोल की

बलदेव राज़ दावर

विज्ञान प्रसार

द्वारा - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार
टैक्नालोजी भवन, नया महरौली मार्ग
नई दिल्ली - 110 016

कहानी माप-तोल की

© सर्वाधिकार विज्ञान प्रसार के अधीन सुरक्षित, 1993

रचना

बलदेव राज दावर

प्रधान सम्पादक

डॉ० नरेन्द्र सहगल

सम्पादन एवं प्रोडक्शन

मनोज पटैरिया

चित्रांकन

अनुकूल मिश्र

आईएसबीएन : 81-7272-010-6

प्रथम संस्करण : 1993

मूल्य : 20 रूपए

प्रकाशन एवं वितरण

विज्ञान प्रसार

द्वारा - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार,
टैक्नालोजी भवन, नया महरौली मार्ग, नई दिल्ली - 110 016

फोन : 6866675

इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री के किसी भी भाग को, ज्यों का त्यों या फेरबदलकर, किसी भी रूप में उपयोग करने से पहले प्रकाशक की लिखित अनुमति लेनी आवश्यक है।


गीतांजलि एडवर्टाईजर्स एण्ड प्रिंटर्स, एच - 26, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली - 110 048 द्वारा मुद्रित

प्राक्कथन

नवसाक्षरों के लिये यह हमारा पहला प्रकाशन है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारत की साक्षरता -दर में वृद्धि हुई है। बहुत से भारतीय नागरिकों ने अभी हाल ही में पढ़ना लिखना सीखा है। उनके अभ्यास के लिये इस छोटी सी पुस्तिका में - कहानी के रूप में - पढ़ने की रोचक सामग्री तो मिलेगी ही, साथ में सरल एवं वैज्ञानिक तरीके से उन्हें माप-तोल के बारे में जानने, समझने और स्वयं कर के सीखने का अवसर भी मिलेगा। यानि आम के आम और गुठलियों के दाम।

इस पुस्तिका की विषय वस्तु और कथानक में नवसाक्षर पाठकों को जानी, पहचानी परिस्थितियां, प्रसंग और पात्र मिलेंगे। ऐसे पात्र जो यहां, वहां पाठक के मन की बात कहें या करें। भला क्यों न होगी दोस्ती ऐसे पात्रों से? दोस्तों, मित्रों से सीखना या प्रेरणा लेना तनिक आसान लगता है; है, ना?

आशा है कि यह पुस्तिका नवसाक्षरों को तो पसन्द आयेगी ही, अन्य पाठक भी इसे पढ़ने में रोचक पायेंगे।


नरेन्द्र सहगल

गणतन्त्र दिवस

(नरेन्द्र सहगल)

26 जनवरी 1993

प्रधान सम्पादक

एवं निदेशक, विज्ञान प्रसार

द्वारा-विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग,

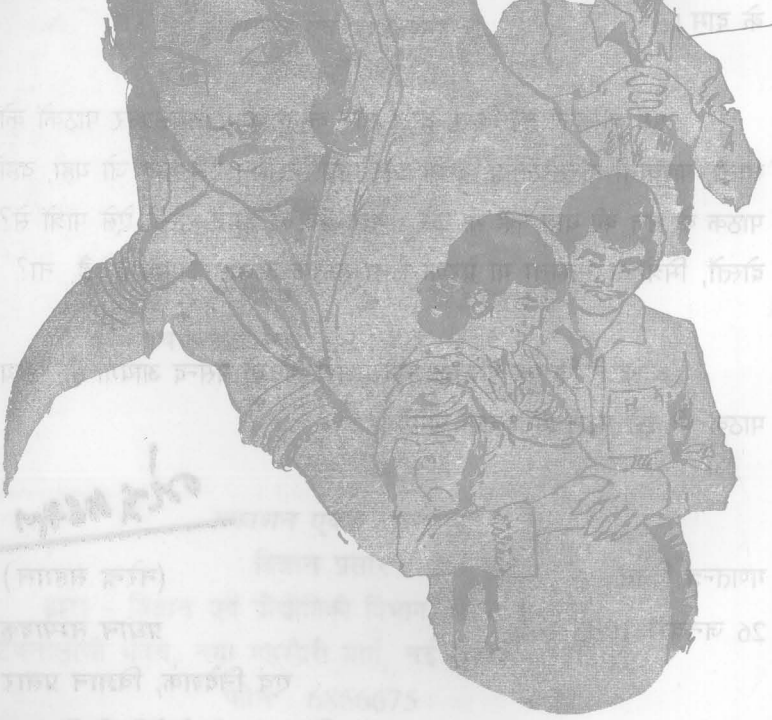
टैक्नॉलोजी भवन, नया महरौली मार्ग,

नई दिल्ली - 110 016

महिली चळवळी

स. १९९३

महिली चळवळी (MWC) ही महाराष्ट्र राज्य शासन या संस्थेचे अखंड चळवळी आहे. ही चळवळी महाराष्ट्र राज्य शासन या संस्थेचे अखंड चळवळी आहे. ही चळवळी महाराष्ट्र राज्य शासन या संस्थेचे अखंड चळवळी आहे.



१९९३

(महाराष्ट्र शासन)
 महाराष्ट्र शासन
 महाराष्ट्र शासन
 महाराष्ट्र शासन

महाराष्ट्र शासन
 महाराष्ट्र शासन
 महाराष्ट्र शासन

०१० ०११ - महाराष्ट्र शासन

महाराष्ट्र शासन

कहानी माप-तोल की

एक थी बहू-सुन्दर, सुगढ़ और सयानी। वह पढ़ी-लिखी भी थी। साथ-साथ हिसाब-किताब भी जानती थी। घर में महीने-भर के लिए कितना आटा चाहिये, कितना दाल चावल और दूध चाहिये, उसे मालूम रहता था। उसके मर्द की कितनी आमदनी है, कितना घर का खर्चा है, और कितनी बचत की जा सकती है, इसका भी वह हिसाब रख सकती थी। लीटर, मीटर और किलोग्राम का हिसाब उसे मालूम था। वह थर्मामीटर से बुखार देख सकती थी। बहू का नाम था द्रोपी।

द्रोपी का पति जवान था, तगड़ा था, और कमाऊ था। वह पढ़-लिख सकता था। लेकिन हिसाब-किताब में बहुत कमजोर था। उसे नहीं मालूम था कि अस्सी सेंटीमीटर लम्बी रस्सी एक मीटर से कम होती है या ज्यादा। लोग उसे बुद्धू समझ कर ठग लेते थे। जब-जब लोग उसे ठगते थे उसे बहुत बुरा लगता था। और अपने पर गुस्सा आता था। उसे अपनी पत्नी से शर्म भी लगती थी। द्रोपी के इस मर्द का नाम था, अरजन।

द्रोपी के पेट में बच्चा पल रहा था। बच्चे को दुनिया में आने में दो-तीन महीने का वक्त बाकी था। द्रोपी को मां बनने की बड़ी चाह थी। वह एक-एक दिन गिन रही थी।

अरजन भी बाप बनने के लिए बहुत उतावला था, लेकिन उसके मन में एक खटका था। उसे डर लगा रहता था कि उसका बच्चा भी उसे बुद्धू समझेगा। बड़ा होकर वह कहेगा कि मेरे बाप को इतना भी पता नहीं कि 500 ग्राम चीनी ज्यादा भारी होती है या आधा किलो रूई। आजकल के बच्चे हैं भी बहुत होशियार। इधर पैदा होते हैं, उधर फर्फर बीस तक गिनती सुनाने लगते हैं। कुछ ही दिनों में पेचकस पकड़ लेते हैं और रेडियो ले कर बैठ जाते हैं। पूछो, क्या कर रहे हो? कहेंगे, मरम्मत कर रहे हैं।

एक दिन अरजन ने द्रोपी से कहा, मुझे मापतोल पढ़ाओ। मीटर की कितनी लम्बाई होती है, और लीटर की कितनी समाई होती है, मुझे बताओ। किलो का कितना वजन होता है और घंटे में कितना वक्त होता है, मुझे बताओ। माप व तोल का हिसाब कुछ इस तरह से सिखाओ कि एक बार में ही समझ आ जाए। बच्चा होने से पहले-पहले मुझे इतना हिसाबी बना दो कि उस के बाद मुझे कोई ठगे नहीं। मुझे शर्म न लगे। मुझ पर कोई हंसे नहीं। और जब मेरा बच्चा हो, वह मेरी इज्जत करे।

द्रोपी ने कहा, ठीक है। कल से मैं तुम्हें हिसाब सिखाऊंगी। लेकिन एक बात समझ लो। माप-तोल का हिसाब पढ़ने की चीज नहीं। वह सुनने या याद करने की चीज नहीं। माप-तोल करने की चीज है। यह विद्या करने की विद्या है। इसलिये कल से हम वस्तुओं की माप-तोल किया करेंगे। आगे-आगे मैं, पीछे-पीछे तुम। थोड़े ही दिनों में तुम्हें इतना हिसाब आ जाएगा जितना किसी इंजीनियर को आता है।

अरजन ने कहा, अच्छा।

द्रोपी ने कहा, हर रोज हिसाब करना होगा। हम हर रोज खाना खाने के बाद और सोने से पहले एक घंटे के लिये हिसाब किया करेंगे। यानी आठ से नौ बजे तक।

अरजन ने कहा, अच्छा।

द्रोपी ने कहा, यह एक महीने का कोरस है। इसे बीच में नहीं छोड़ना। लम्बाई का, तोलाई का, समाई का और घड़ी की रफ्तार का, सब हिसाब करने के बाद ही छोड़ना, पहले नहीं छोड़ना।

अरजन ने कहा, अच्छा।

द्रोपी ने कहा, कल जब काम से लौट कर घर आओ तब बाजार से हिसाब की पहली किताब ले आना। पता है कौन-सी किताब? एक इंची टेप। यानी लम्बाई मापने का फीता। अगर फीता दो मीटर लम्बा हो तो अच्छा रहेगा। यह फीता ही हिसाब की पहली किताब होगा।

फिर क्या हुआ - 1

द्रोपी ने अरजन के हाथ से मापने का फीता ले लिया। उसने कहा, आओ मापें कि हमारा यह कमरा कितना लम्बा है, और कितना चौड़ा है। मैं फीते के इस सिरे को कमरे के इस कोने में पकड़ कर रखती हूँ। तुम दीवार के साथ-साथ फीते को सटाकर फर्श पर बिछा दो। उसे खींच कर पकड़ो। उसे ढीला नहीं छोड़ो। फीते पर जहाँ एक मीटर का निशान है, वहाँ तक फर्श की लम्बाई एक मीटर है। वहाँ फर्श पर निशान लगाओ। यह निशान तुम किसी चाक, पैसिल या कोयले से लगा सकते हो।

आओ अब इस निशान से आगे मापें।

इस तरह द्रोपी और अरजन ने अपने कमरे के फर्श की एक साइड माप ली। उसकी लम्बाई कितनी निकली? तीन मीटर से कुछ ऊपर।

अरजन ने पूछा, यह साइड तीन मीटर से कितनी ऊपर है?

द्रोपी ने कहा, अभी इसे छोड़ दो। आओ पहले कमरे की दूसरी साइड मापें।

अरजन ने और द्रोपी ने मिलकर फीते से फर्श की दूसरी साइड को मापा। पता है वह साइड कितनी निकली? वह तीन मीटर से कुछ कम निकली।

अरजन ने पूछा, यह साइड तीन मीटर से कितनी कम है?

द्रोपी ने कहा, यह बाद में मापेंगे। पहले यह बताओ कि जो साइड तीन मीटर से कुछ ज्यादा है उसके सामने वाली साइड कितनी लम्बी होगी?

अरजन ने हंस कर कहा कि यह तो मैं बिना मापे ही बता सकता हूँ। सामने वाली साइड की लम्बाई भी तीन मीटर से कुछ ऊपर होनी चाहिये।

द्रोपी ने कहा, तुम्हारी बात ठीक है। लेकिन फिर भी तुम इसे माप कर देखो।

अरजन ने माप कर देखा और कहा, इस साइड की लम्बाई भी तीन मीटर से उतनी ही ज्यादा है।

इसके बाद द्रोपी और अरजन ने घर में कई वस्तुओं की पैमाइश की। दरवाजा नापा। दरवाजे की चौड़ाई एक मीटर से कुछ कम निकली। उसकी ऊंचाई दो मीटर से जरा-सी ज्यादा निकली।

चारपाई की नपाई की। वह एक मीटर से कम चौड़ी थी। और दो मीटर से कम लम्बी थी। फिर खिड़की मापी। फिर घर में एक ट्रंक था उसे मापा। जब मापने लायक और कोई वस्तु दिखाई नहीं दी, तो अलमारी मापी। फिर चद्दर मापी।

द्रोपी ने पूछा, तुम्हें याद है कि इस कमरे का फर्श कितना लम्बा और कितना चौड़ा निकला था?

अरजन ने कहा, मुझे याद है कि इस कमरे का फर्श तीन मीटर से कुछ ज्यादा लम्बा है और तीन मीटर से कुछ कम चौड़ा है।

द्रोपी ने कहा, अच्छा, अब आज की आखिरी नपाई करेंगे।

अरजन ने पूछा, अब किस को मापूं?

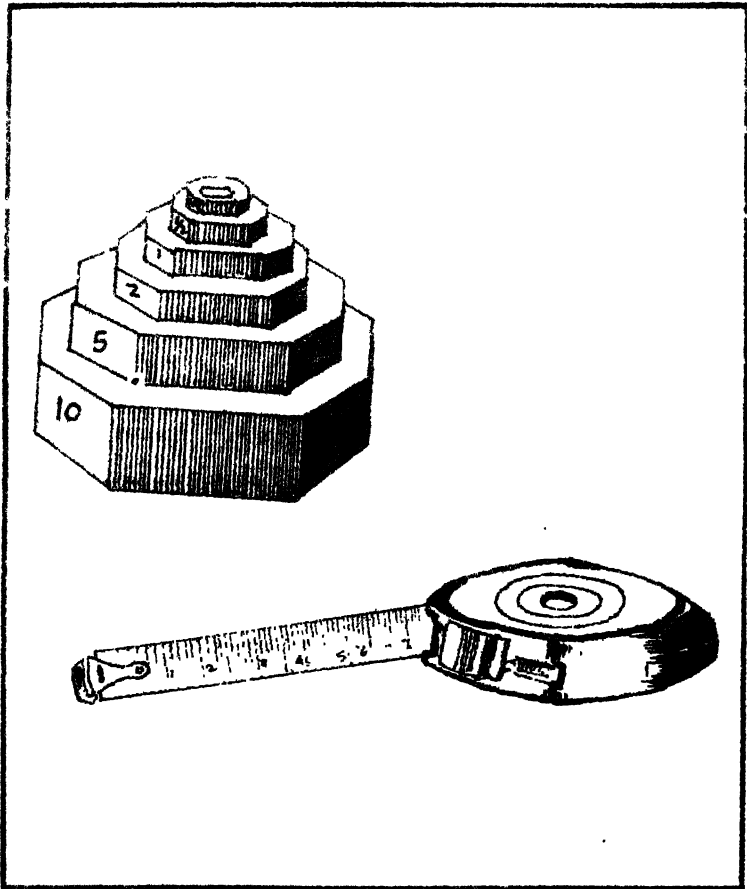
द्रोपी ने कहा, अब छत को मापो। बताओ इस कमरे की छत कितनी लम्बी और कितनी चौड़ी है।

अरजन ने कहा, यह सवाल तो बड़ा आसान है। इस कमरे की छत की लम्बाई और चौड़ाई को मैं बिना मापे ही बता सकता हूँ।

द्रोपी ने पूछा वह कैसे?

अरजन ने छत की तरफ देखा, फिर उसने फर्श की तरफ देखा, फिर वह हंस पड़ा। उसने कहा, इस कमरे के फर्श की जितनी लम्बाई है उतनी ही लम्बाई छत की है। और जितनी इस कमरे के फर्श की चौड़ाई है उतनी ही चौड़ाई छत की है। अगर विश्वास न हो तो मेरे कंधों पर खड़ी हो जाओ और खुद माप कर देख लो।

द्रोपी अपने पति के जवाब को सुन कर बहुत खुश हुई। वह सोचने लगी कि मेरा पति हिसाब में कमजोर है लेकिन वह है बहुत समझदार। अक्ल उसमें पढ़े-लिखों से ज्यादा है।



फिर क्या हुआ-2

द्रोपी ने कहा, कल हमने फर्श की नपाई की थी। फर्श नीचे था और फीता उसके ऊपर। आज फीता नीचे होगा और जिसे मापना है वह ऊपर होगा।

अरजन ने कहा, वह कैसे?

द्रोपी ने कहा, तुम बैठ जाओ।

अरजन पालथी मार कर बैठ गया। द्रोपी ने उसके सामने मीटर का फीता बिछा दिया। द्रोपी ने कहा, यह फीता यहां इस सिरे से लेकर यहां इस लकीर तक एक मीटर है। फीते पर एक एक उंगल का फासला छोड़ कर लकीरें लगी हुई हैं। इन लकीरों पर लिखा है, 1. 2. 3. 4. 5. 6., 10. 20. 40. 50., 100 तक। यहां जिस लकीर पर 50 लिखा है वहां तक आधा मीटर है।

अरजन ने कहा, जैसे 50 पैसे एक रुपये का आधा होते हैं, वैसे ही उंगल-उंगल के ये पचास फासले मिल कर आधा मीटर होते हैं।

द्रोपी ने कहा, बिल्कुल ठीक। जैसे एक रुपये में सौ पैसे होते हैं, वैसे ही एक मीटर में सौ सेंटीमीटर होते हैं। सेंटी का मतलब ही होता है सौवां हिस्सा। सेंटीमीटर का पूरा मतलब हुआ, मीटर का सौवां हिस्सा।

अरजन ने कहा, मैं समझ गया हूं। इस मीटर पर इन दो लकीरों के बीच जो फासला है वह मीटर का सौवां हिस्सा है। और इस फीते के इस सिरे से लेकर यहां, जहां पचास लिखा है, आधा मीटर है।

द्रोपी ने कहा, बिल्कुल ठीक और, फीते के सिरे से ले कर यहां, जहां 25 लिखा है, वहां तक का फासला 25 सेंटीमीटर है।

अरजन ने कहा, मैं समझ गया हूं। यहां, जहां 25 लिखा है, वहां तक मीटर का चौथाई हिस्सा है। जैसे रुपये की चवन्नी होती है।

द्रोपी ने कहा, अगर समझ गए हो तो आओ नपाई करें।

हां, नपाई करें, अरजन ने कहा।

द्रोपी ने अरजन के हाथ में यह किताब थमा दी। और कहा, यह किताब कितनी लम्बी है?

अरजन ने इस किताब की लम्बाई वाली साइड को फीते के ऊपर रखा। किताब का एक सिरा वहां, जहां फीता शुरू होता था। दूसरा सिरा जिस लकीर को छू रहा था, उस पर लिखा था 22। अरजन ने कहा, इस किताब की लम्बाई 22 सेटीमीटर से जरा-सी कम है।

द्रोपी ने कहा, बिल्कुल ठीक। अब इस किताब की चौड़ाई मापो। अरजन ने चौड़ाई मापी और कहा, इस किताब की चौड़ाई 14 सेंटीमीटर से जरा-सी कम है।

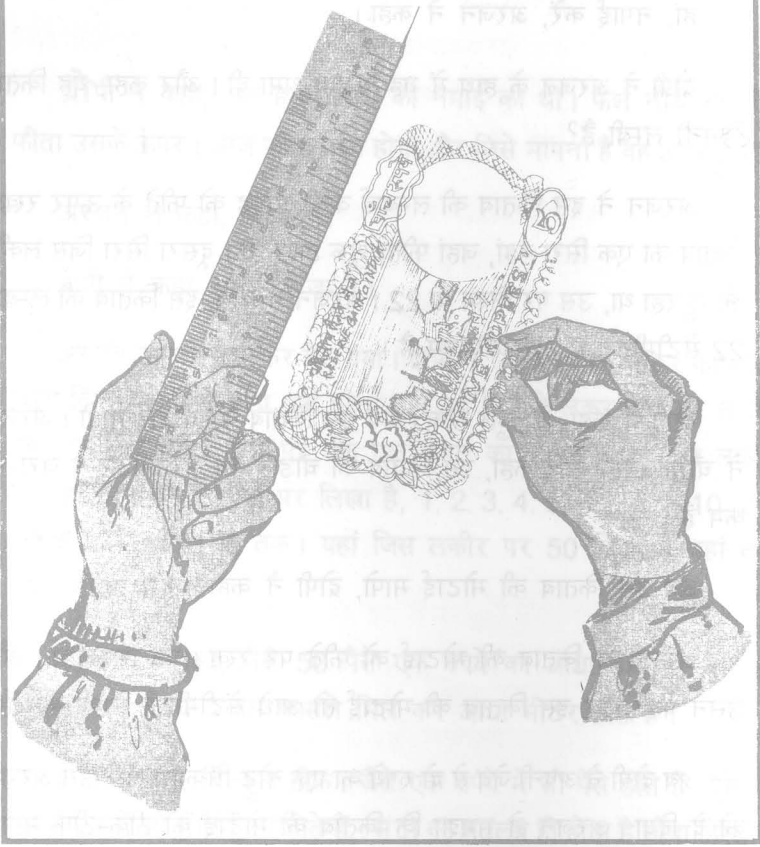
अब इस किताब की मोटाई मापो, द्रोपी ने कहा।

अरजन ने किताब की मोटाई को फीते पर रखा। वह हंस पड़ा। और उसने कहा, अरे इस किताब की मोटाई तो आधे सेंटीमीटर से भी कम है।

अब द्रोपी ने अपनी जेब से दो रुपये का एक नोट निकाला और उसे अरजन को दे दिया। अरजन ने समझा कि किताब की मोटाई को ठीक-ठीक मापने के लिए उसे इनाम मिला है। वह नोट को अपनी जेब में डालने लगा। द्रोपी ने कहा, यह इनाम नहीं। यह अगला काम है। तुम इस फीते की मदद से बताओ कि इस नोट की चौड़ाई कितनी है।

अरजन ने हंसते-हंसते नोट वापस निकाल लिया। उसने नोट की चौड़ी साइड को फीते पर रखकर कहा, यह नोट साढ़े छ सेंटीमीटर से जरा-सा कम चौड़ा है।

अब इस की लम्बाई मापो, द्रोपी ने कहा।



अरजन ने नोट की लम्बाई फीते पर रखकर मापी। उसने कहा, इस नोट की लम्बाई दस सेंटीमीटर से जरा-सी ज्यादा है।

अब द्रोपी ने अरजन को पांच रुपये का नोट दिया। पूछा कि यह नोट कितना चौड़ा है और कितना लम्बा है।

अरजन ने बड़े ध्यान से नोट की नपाई की और कहा, पांच के नोट की चौड़ाई दो के नोट के जितनी है। यानी यह भी साढ़े छः सेंटीमीटर से जरा-सा कम चौड़ा है। पर पांच के नोट की लम्बाई ज्यादा है। पांच के नोट

की लम्बाई है - साढ़े ग्यारह सेंटीमीटर।

अब द्रोपी ने अरजन के सामने दस रुपये का नोट रखा। द्रोपी ने कहा अब इसे मापो।

अरजन ने कहा, चौड़ाई में यह नोट भी दो के नोट और पांच के नोट के बराबर है, पर इसकी लम्बाई साढ़े तेरह सेंटीमीटर से जरा-सी ज्यादा है।

द्रोपी ने कहा, आज का पाठ खत्म। बाकी कल।

अरजन तीनों नोटों को समेट कर अपनी जेब में डालने लगा। द्रोपी ने कहा, नोट वापस कर दो।

अरजन ने कहा, यह रकम तो इनाम है, ठीक-ठीक नपाई करने की।

द्रोपी ने कहा, मैं एक और सवाल पूछती हूँ। अगर तुम उस सवाल का भी ठीक-ठीक जवाब दोगे तो ये 17 रुपये तुम्हारा इनाम।

अरजन ने कहा, पूछो।

द्रोपी ने पूछा, इस नोट की मोटाई कितनी है?

अरजन सिर खुजलाने लगा। कहने लगा, यह तो बड़ा मुश्किल सवाल है। क्या मीटर के इस फीते से नोट की मोटाई माप सकते हैं।

द्रोपी ने कहा, हां इसी फीते से इस नोट की मोटाई मापी जा सकती है।

अरजन ने पूछा, वह कैसे?

द्रोपी ने कहा, अगर इनाम चाहिये तो इस फीते की मदद से तुम्हें खुद पता लगाना होगा कि एक नोट की मोटाई कैसे माप सकते हैं। तुम कल तक सोच कर बताना। तब तक ये नोट जिस जेब से निकले हैं उसी जेब में रहेंगे। लाओ रुपये।

अरजन ने रुपये लौटा दिये।

फिर क्या हुआ-3

अगले दिन फिर अरजन आलती-पालथी मार कर बैठ गया। उसने अपने सामने फर्श पर मीटर का फीता बिछा दिया। उसने द्रोपी से कहा, आज मैं बताऊंगा, तुम सुनो। द्रोपी ने कहा, बताओ।

अरजन ने कहा, फीते के इस सिरे से लेकर यहां, जहां 100 लिखा हुआ है वहां तक, एक मीटर है। जहां 50 लिखा हुआ है, वहां तक आधा मीटर है। जहां 25 लिखा हुआ है वहां तक चौथाई मीटर है। जहां 75 लिखा हुआ है वहां तक पौना मीटर है। ठीक?

द्रोपी ने कहा, बिल्कुल ठीक।

अरजन ने कहा, यहां इस सिरे से लेकर जहां एक लिखा हुआ, वहां तक एक सेंटीमीटर है। ठीक?

द्रोपी ने कहा, ठीक, बिल्कुल ठीक।

अरजन ने कहा कि इस फीते पर एक एक सेंटीमीटर के बीच में एक छोटी-सी लकीर और भी है। मेरा ख्याल है कि यह लकीर सेंटीमीटर को दो बराबर हिस्सों में बांटती है। यानी आधा सेंटीमीटर इधर है और आधा उधर। ठीक?

द्रोपी ने कहा, बिल्कुल ठीक।

अरजन ने कहा, इस फीते के पहले सेंटीमीटर को छोटी-छोटी लकीरें लगा कर दस हिस्सों में बांटा गया है। हर एक हिस्सा एक सेंटीमीटर के दसवें हिस्से के बराबर होगा। ठीक?

द्रोपी ने कहा, बिल्कुल ठीक। और सुनो। पता है, एक सेंटीमीटर के दसवें हिस्से को क्या कहते हैं? इसे कहते हैं मिलीमीटर। पता है इसे मिलीमीटर

क्यों कहते हैं? इसलिए, कि मिली का मतलब होता है हजारवां हिस्सा। एक सेंटीमीटर का दसवां हिस्सा, एक मीटर का हजारवां हिस्सा ही तो होगा।

अरजन ने कहा, कल तुम ने पूछा था, नोट की मोटाई कितनी होती है। तुम ने कहा था कि अगर मैं ठीकठीक बताऊंगा तो मुझे इनाम मिलेगा और तीनों नोट मेरे हो जाएंगे। लाओ उनमें से एक नोट। देखें कि एक नोट की मोटाई कितनी होती है।

द्रोपी ने अपनी जेब से दो रुपये का नोट निकाल कर अरजन के हाथ में थमा दिया। अरजन ने नोट की मोटाई को फीते के उस भाग पर रखा जहां मिलीमीटर के निशान थे। फिर उसने ध्यान से फीते को देखा। उसे बड़ी निराशा हुई। फिर वह हंसने लगा। अरे इस नोट की मोटाई तो एक मिलीमीटर से भी कम है। इस नोट की मोटाई तो न के बराबर है।

द्रोपी ने कहा, इस नोट की मोटाई एक मिलीमीटर से बहुत कम है, पर वह न के बराबर नहीं। इस नोट की मोटाई कुछ न कुछ तो जरूर है।

अरजन ने कहा, हां, है तो सही।

द्रोपी ने कहा, अगर है तो कितनी है इस फीते से माप कर बताओ।

अरजन सिर खुजलाने लगा। एकाएक अरजन को एक ख्याल आया। वह उछल पड़ा। बोला, बताऊं?

द्रोपी ने कहा, हां बताओ।

अरजन ने कहा, सुनो। एक बार मैं ने दो दो के नोटों की एक गड्डी देखी थी। देखी क्या थी, पाई थी। यानी वह मुझे पगार में मिली थी। वह नोट बिल्कुल नए थे। एक एक नोट कड़क था। नए नोटों की वह गड्डी मैं ने संभाल कर रख दी। उसे मैंने खर्च नहीं किया। वह गड्डी अभी भी मेरे पास है। मैंने उसे ट्रंक में संभाल कर रखा हुआ है। कहो तो दिखाऊं?

द्रोपी भी उछल पड़ी। उस ने कहा, हां दिखाओ।

अरजन ने ट्रंक खोल कर दो दो के नए नोटों की गड्डी निकाली।

द्रोपी ने पूछा, क्या पूरे दो सो रुपये हैं

लो, गिन लो, अरजन ने कहा।

द्रोपी ने कहा, गिनने की जरूरत नहीं। इन नोटों पर नम्बर लिखे हुए हैं। यहां देखो, पहले नोट पर क्या लिखा है इतने लाख, इतने हजार, इतने सौ और जीरो-एक। अब इधर देखो सब से आखिरी नोट पर क्या नम्बर लिखा है? लिखा है, इतने लाख, इतने हजार, इतने सौ और जीरो-जीरो। इसका मतलब हुआ एक से लेकर सौ तक पूरे सौ नोट हैं।

अरजन नोट की गड्डी को पकड़ कर खड़ा हो गया। वह जोश में भर कर बोला, पता लग गया, पता लग गया। बोलत-बोलते अरजन कूदने लगा। कूदते-कूदते वह नाचने लगा। नाचते-नाचते वह गाने लगा।

पता लग गया, पता लग गया।

द्रोपी बड़ी हैरान हुई कि अरजन को हुआ क्या है। उसने पूछा, क्या पता लग गया है?

अरजन ने कहा, मुझे इस नोट की मोटाई का पता लग गया है। मैं ने शर्त जीत ली है। मैंने इनाम जीत लिया है।

द्रोपी ने कहा, पहले इस नोट को माप कर बताओ कि इसकी मोटाई कितनी है, फिर इनाम मिलेगा।

अरजन ने कहा, देखो सौ की इस गड्डी की मोटाई को मैं इस फीते पर रखता हूँ। देखो इस गड्डी की मोटाई कितनी है। ठीक एक सेंटीमीटर। इस का मतलब हुआ कि सौ नोटों की मोटाई एक सेंटीमीटर होती है। और एक नोट की मोटाई हुई एक सेंटीमीटर का सौवां हिस्सा यानी एक मिलीमीटर का दसवां हिस्सा। ठीक?

द्रोपी ने कहा, बिल्कुल ठीक।

तो फिर लाओ मेरा इनाम, पूरे सत्रह रुपये।

द्रोपी ने अरजन को सत्रह रुपये दे दिये।

फिर द्रोपी ने अरजन से पूछा, तुम इन सत्रह रुपयों का क्या करोगे?

मेरी कमीज फट गई है। मैं एक नई कमीज खरीदूंगा, अरजन ने कहा।

द्रोपी ने कहा, सत्रह रुपये में कमीज नहीं आएगी। अगले मंगलवार जब तुम्हें छुट्टी होगी, हम मंगलबाजार जाएंगे। वहां से कमीज के नाप का कपड़ा लाएंगे। और उसे सीयेंगे हम खुद, घर पर।

अरजन ने कहा, अच्छा।

फिर द्रोपी ने पूछा, इन दो सौ रुपयों का क्या करोगे?

अरजन ने कहा, जब हमारा बच्चा होगा उसके लिए अच्छे-अच्छे कपड़े सिलवाएंगे।



फिर क्या हुआ-4

द्रोपी ने कहा, जब हमारा बच्चा होगा तब उसके लिए कपड़े चाहिये होंगे। वह कपड़े हम घर पर बनाएंगे। तुम बाजार से कपड़ा लाना, मैं घर पर सीऊंगी।

मशीन कहां से आयेगी?

ऐसा करेंगे, पड़ोस में राधा है ना? उसके पास मशीन है। उससे दो-चार दिन के लिए मशीन मांग लेंगे।

अरजन ने कहा, हां, यह ठीक है। अभी तो यही करना होगा। लेकिन जब अपने पास कुछ पैसे जमा होंगे तो हम अपनी मशीन खरीद लेंगे।

द्रोपी ने पूछा, क्या मशीन किराये पर नहीं मिल सकती?

अरजन ने कहा, पता लगाएंगे।

द्रोपी ने कहा, बस अड्डे के पास हर मंगलवार को जो बाजार लगता है, उस बाजार में एक दुकान पर कपड़ों के टुकड़े मिलते हैं। वे धानों के बचे-खुचे टुकड़े होते हैं। अगर धान से कपड़ा कटवा कर लो तो दुगना भाव लगता है। बचा-खुचा टुकड़ा खरीदो तो आधे दाम में मिल जाता है। पर एक बात का पता होना चाहिये कि कितना लम्बा टुकड़ा किस काम आएगा।

अरजन : वह कैसे पता चलेगा?

द्रोपी : वह ऐसे कि हम बच्चे की नपाई करेंगे। पता लगाएंगे कि बच्चे की फ्राक कितनी लम्बी चाहिये। कितना घेर चाहिये। कितने लम्बे उसके बाजू चाहियें और फिर हिसाब लगाकर पता लगाएंगे कि कितना कपड़ा चाहिये।

अरजन : बस?

द्रोपी : बस । और क्या? हिसाब लगाकर टुकड़ा खरीदेंगे । न कम, न ज्यादा ।

अरजन सोचने लगा । अभी बच्चा तो हुआ नहीं । द्रोपी अभी से कपड़ा खरीदने की चिंता कर रही है । उसे ध्यान आया कि उसकी भी तो कमीज़ फट गयी है । उसे अपने लिए अभी कमीज़ चाहिये । उसने द्रोपी से कहा, पहले मेरी नपाई करो । बताओ मेरी कमीज़ पर कितना कपड़ा लगेगा ।

द्रोपी ने कहा, ठीक है । मैं अभी तुम्हारी नपाई करती हूँ । लाओ हमारा फीता और खड़े हो जाओ मेरे सामने । अरजन तनकर खड़ा हो गया । द्रोपी ने नपाई शुरू की । सब से पहले उसने कंधे से जाँघों तक की लम्बाई मापी । 80 सेंटीमीटर । फिर कंधे से कलाई तक की लम्बाई मापी । 55 सेंटीमीटर । द्रोपी ने कहा, बस, हो गई नपाई । अब मैं बताती हूँ कि कितना कपड़ा चाहिये ।

कमीज़ के आगे के पल्ले की लम्बाई 80 सेंटीमीटर

कमीज़ के पीछे के पल्ले की लम्बाई 80 सेंटीमीटर

कंधों के ऊपर तीरे की चौड़ाई 8 सेंटीमीटर

सिलाई के लिए गुंजाइश 2 सेंटीमीटर

कटाई में टेढ़ेपन की गुंजाइश 10 सेंटीमीटर

कुल लम्बाई 180 सेंटीमीटर

अब लो बाजुओं की लम्बाई 55 सेंटीमीटर

कफों की चौड़ाई 8 सेंटीमीटर

सिलाई के लिए गुंजाइश 2 सेंटीमीटर

कटाई में टेढ़ेपन की गुंजाइश 5 सेंटीमीटर

कुल लम्बाई 70 सेंटीमीटर

द्रोपी ने कहा, बस हो गया हिसाब । अब मैं बताऊंगी कमीज के लिए कितना कपड़ा चाहिये ।

अरजन ने कहा, बताओ ।

द्रोपी ने कहा, कितना कपड़ा चाहिये, यह कपड़े की चौड़ाई पर निर्भर है । अगर कपड़े की चौड़ाई एक मीटर से कम है तो तुम्हारी कमीज पर, 180 जमा 70, कुल मिलाकर 250 सेंटीमीटर, यानी ढाई मीटर कपड़ा चाहिये ।

अरजन ने पूछा, अगर कपड़े की चौड़ाई लगभग सवा मीटर हो, यानी एक मीटर और पच्चीस सेंटीमीटर? द्रोपी ने कहा, तब एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर कपड़े से काम चलेगा ।

अरजन ने पूछा, वह कैसे?

द्रोपी ने बताया, वह इस तरह कि बाजुओं के लिए कपड़ा चौड़ाई में से निकल आएगा ।

यह सुन कर अरजन घर से बाहर की ओर जाने लगा । द्रोपी ने पूछा, कहां जा रहे हो?

अरजन ने कहा, मैं बाजार जा रहा हूं, कमीज का कपड़ा लेने ।

इस वक्त? द्रोपी ने पूछा ।

हां, इसी वक्त । सुबह तक मैं भूल जाऊंगा कि अगर कपड़े की चौड़ाई एक मीटर से कम हुई तो दो मीटर और पचास सेंटीमीटर कपड़ा चाहिये और अगर कपड़े की चौड़ाई सवा मीटर हुई तो एक मीटर और अस्सी सेंटीमीटर कपड़ा लगेगा ।

लेकिन इस वक्त रात के नौ बजे हैं । सभी बाजार बंद हैं । इस वक्त कपड़ा कहां से लाओगे?

अरजन ने कहा, अगर अभी-अभी कपड़ा नहीं लाया तो कल तक मैं भूल जाऊंगा कि चौड़ाई अगर कम हो तो कपड़ा ज्यादा लगेगा और बर (अर्ज) अगर ज्यादा हो तो कपड़ा कम लगेगा।

बड़ी मुश्किल से द्रोपी ने अरजन को बाहर जाने से रोका।

उस रात को द्रोपी की आंख खुली। उसने देखा कि अरजन सोया-सोया बोल रहा है। वह कह रहा है, कम चौड़ाई, ज्यादा कपड़ा, ज्यादा चौड़ाई, कम कपड़ा।

कुछ उपयोगी माप

10 मिली मीटर = 1 सेन्टी मीटर

100 सेन्टी मी. र = 1 मीटर

1000 मीटर = 1 किलोमीटर

10 मिलीग्राम = 1 ग्राम

500 ग्राम = $\frac{1}{2}$ किलोग्राम

1000 ग्राम = 1 किलोग्राम

100 किलोग्राम = 1 क्विंटल

10 क्विंटल = 1 टन

100 मिली लीटर = 1 लीटर (1 किलो लीटर)

फिर क्या हुआ-5

द्रोपी ने पूछा, अजी सुनो। तुम ज्यादा लम्बे हो या मैं?

अरजन बोला, भला यह भी पूछने की बात है। मैं तुम से ज्यादा लम्बा हूँ। आओ हम साथ-साथ खड़े हो जाएं। अकड़ कर खड़े हो जाएं। मैं अपने जूते उतार देता हूँ। तुम भी अपनी चप्पल उतार दो। देखो तुम्हारा कंधा नीचे है, मेरा कंधा ऊपर है। तुम्हारी ठोड़ी नीचे है, मेरी ठोड़ी ऊपर है। तुम्हारे कान मेरे कानों से नीचे हैं। तुम्हारी आंखें मेरी आंखों से नीचे हैं।

द्रोपी ने कहा, बस बस, बड़े आए अपने को ऊपर और हमें नीचा बताने वाले। मैंने पूछा है कि तुम्हारा कद कितना है और हमारा कद कितना है। तुम कितने मीटर और कितने सेंटीमीटर लम्बे हो और हम कितने। ठीक-ठीक माप कर बताना होगा।

अरजन ने कहा, तो फिर लाओ हमारा मीटर वाला फीता। अभी मापते हैं। पहले मेरा कद मापो।

द्रोपी ने कहा, आओ जूते उतार कर खड़े हो जाओ दीवार के साथ।

अरजन दीवार के साथ सट कर खड़ा हो गया।

द्रोपी ने कहा, पैर जोड़ लो। एड़ियां नहीं उठाना। और तन कर खड़े रहना। गरदन भी सीधी रखना। सामने देखना। द्रोपी ने अरजन के सिर पर एक किताब रख दी। जहां किताब ने दीवार को छुआ वहां द्रोपी ने कोयला ले कर एक निशान लगा दिया। और अरजन से कहा, अब हट जाओ।

अरजन हट गया। उस के बाद द्रोपी और अरजन ने मिलकर उस निशान से लेकर फर्श तक का फासला मापा। एक मीटर और 70 सेंटीमीटर। यानी पीने दो मीटर से जरा सा कम। वाह!

अरजन ने कहा, मुझे एक बात याद आ गई है।

द्रोपी ने पूछा, क्या?

अरजन ने कहा, तीन साल पहले मैं फौज में भरती होने के लिए गया था। तब उन्होंने इसी तरह मेरा कद मापा था। लेकिन उन्होंने मेरी छाती भी मापी थी। द्रोपी, तुम भी मेरी छाती मापो।

द्रोपी ने अरजन को कमीज उतारने के लिए कहा, ठीक वैसे ही जैसे भरती के दफ्तर में होता है।

फिर द्रोपी ने अरजन की छाती मापी। 90 सेंटीमीटर। वाह!

द्रोपी ने अरजन से कहा, अब सांस खींच कर अपनी छाती को फुलाओ। जितना ज्यादा फुला सकते हो उतना ज्यादा फुलाओ। फिर द्रोपी ने अरजन की फूली हुई छाती की नपाई की। 95 सेंटीमीटर। वाह!

द्रोपी ने कहा, अरे तुम तो बड़े तगड़े मरद हो। तुम फौज में भरती क्यों नहीं हुए?

अरजन ने कहा, मैं तो भरती होना चाहता था। मैं तो चाहता था कि सुन्दर और कड़कदार वरदी पहनूं। पैरों में चमकते हुए बूट डालूं। और कंधे पर बन्दूक रख कर रीब से लैफ्ट-राइट करूं। लेकिन मेरे चाहने से क्या होता था। उन्होंने मुझे भरती नहीं किया।

द्रोपी ने पूछा, क्यों?

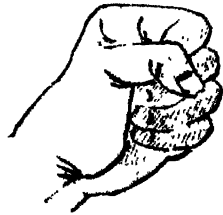
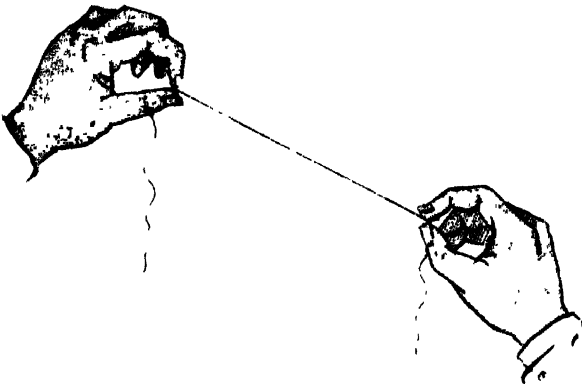
अरजन ने कहा, वह इसलिए कि मुझे हिसाब नहीं आता था। उन्होंने कहा, हिसाब सीख कर अगले साल आना।

फिर तुम ने हिसाब क्यों नहीं सीखा।

अरजन ने कहा, यूं ही। भूल हो गई। एक बात और भी थी।

द्रोपी ने पूछा, वह क्या?

तुम्हारे जैसी टीचर तब नहीं मिली, अरजन ने कहा।



फिर क्या हुआ-6

अगले दिन द्रोपी ने अरजन को समझाया और कहा, लम्बाई मापने की बहुत जरूरत पड़ती रहती है। हर किसी को अपने-अपने काम में लम्बाई मापने की जरूरत रहती है। बढई नाप-नाप कर ही मेज-कुर्सियां और चारपाइयां बनाते हैं। लोहार नाप-नाप कर ही पुर्जे और औजार बनाते हैं। राज-मिस्त्री नाप-नाप कर ही नीवें डालते हैं, दीवारें चुनते हैं, फर्श बिछाते हैं और छत तानते हैं। नाव बनाने वाले भी हर एक तख्ते की नपाई करने के बाद ही उसे काटते और ठोकते हैं।

अरजन ने कहा, यह बात बिल्कुल ठीक है।

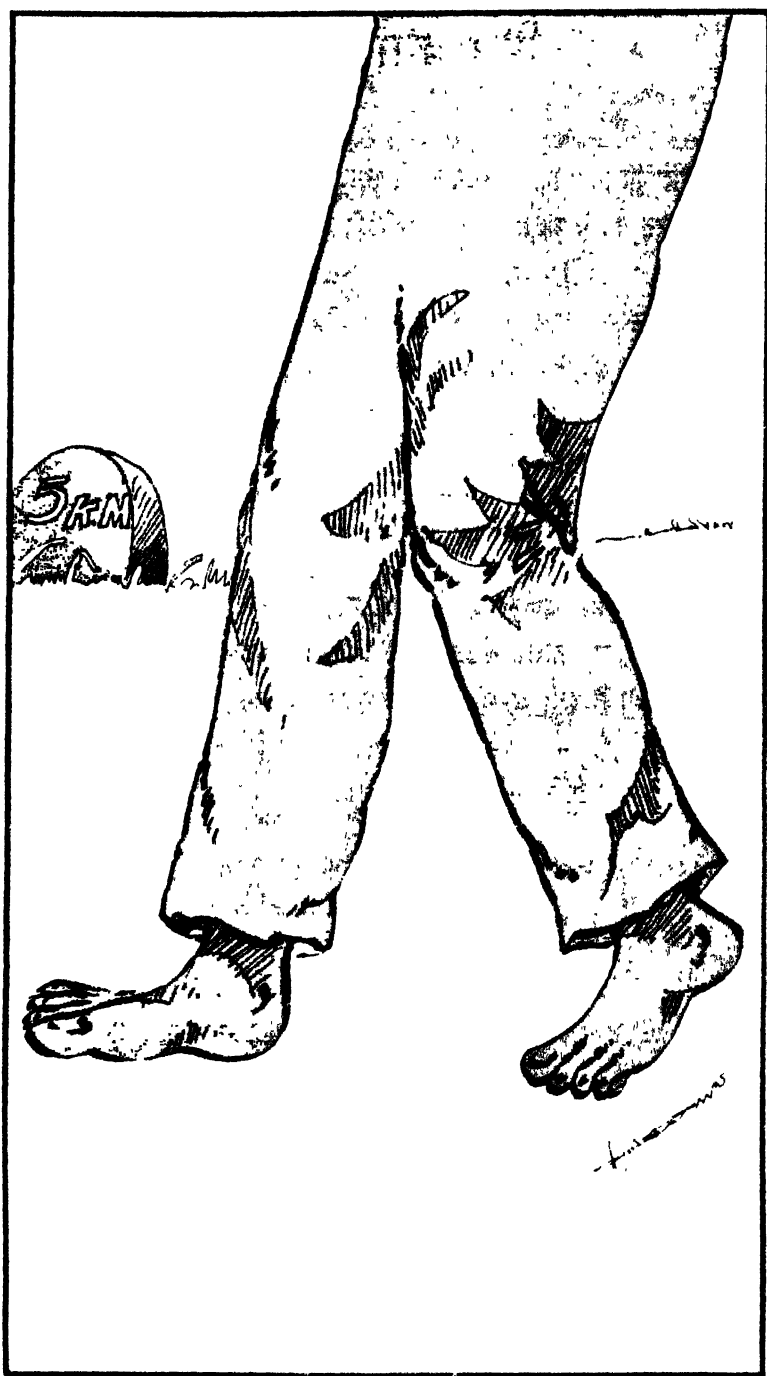
द्रोपी ने कहा, मजदूर और मिस्त्री में यही फर्क होता है। मजदूर केवल बोझा ढोता है, वह नपाई-तोलाई नहीं जानता। मिस्त्री नपाई-तोलाई जानता है। जो मिस्त्री जितनी अच्छी पैमाइश करना जानता है उसे उतनी ही ज्यादा पगार मिलती है। बड़े-बड़े पुल बनाने वाले इंजीनियर एक-एक ईंट और एक-एक ब्रिक गिन-गिन कर और नाप-नाप कर लगाते हैं।

अरजन ने कहा, तुम्हारी यह बात बिल्कुल ठीक है।

द्रोपी ने कहा, पुराने वक्तों में पैमाइश उंगलियों से होती थी, चप्पों से होती थी, बालिशतों से होती थी, बाजुओं से होती थी, पैरों से होती थी, कदमों से होती थी, इंचों, फुटों और गजों से होती थी, कोसों और मीलें से होती थी, पर आजकल नपाई का एक ही पैमाना है। मीटर। सभी फासले मीटरों में मापे जाते हैं।

अरजन ने पूछा, केवल मीटरों से?

द्रोपी ने कहा, हां, आज कल पैमाइश केवल मीटरों से होती है। अगर सड़कें मापनी हों तो मीटरों से और अगर किसी नोट की मोटाई मापनी हो तो मीटर से।



अरजन ने कहा, यह तो बड़ा आसान है ।

द्रोपी ने कहा, है तो बहुत आसान लेकिन एक बात और याद रखनी होगी ।

अरजन ने कहा, वह क्या?

द्रोपी ने कहा, किलो का मतलब होता है, हजार । अगर कोई फासला हजार मीटर हो तो हम उस फासले को एक किलामीटर भी कह सकते हैं । इसलिये जब सड़कों की लम्बाई बतानी हो तो अक्सर किलोमीटरों में मापते हैं ।

और अगर फासले छोटे हों तो? अरजन ने पूछा ।

द्रोपी ने कहा, अगर फासले छोटे हों तो हम उन्हें सेंटीमीटरों और मिलीमीटरों में मापते हैं ।

अरजन ने कहा, मैं समझ गया । अब मैं बताता जाता हूँ, तुम सुनो, और अगर गलत बताया तो तुम कहना गलत । अगर ठीक बताया तो तुम कहना ठीक । तो लो सुनो ।

दस नोटों की मोटाई एक मिलीमीटर होती है ।

हां, ठीक ।

दस मिलीमीटर मिलकर एक सेंटीमीटर होते हैं ।

हां, ठीक ।

सौ सेंटीमीटर मिलकर एक मीटर होता है ।

हां, ठीक ।

और हजार मीटर मिल कर एक किलोमीटर होता है ।

बिल्कुल ठीक ।

फिर क्या हुआ-7

द्रोपी ने कहा, मीटर का यह फीता हमारे बहुत काम की चीज़ है। यह फीता केवल तीन रुपये का आया है। लेकिन इस के घर पर होने से हमारे सैकड़ों काम संवरेंगे और हजारों रुपयों की बचत होगी।

इस मीटर से हम लम्बाई माप सकते हैं, चौड़ाई माप सकते हैं, मोटाई माप सकते हैं, गहराई माप सकते हैं, ऊंचाई माप सकते हैं। यानी एक बिन्दु से लेकर दूसरे बिन्दु तक जो फासला हो उसे माप सकते हैं।

अरजन ने पूछा, क्या इससे जमीन भी माप सकते हैं?

द्रोपी ने कहा, क्यों नहीं। घरों की, खेतों की बागबगीचों की, चाहे जिसकी नपाई हो, इस मीटर के फीते से हो सकती है। लेकिन.....

लेकिन क्या? अरजन ने पूछा।

द्रोपी ने कहा, यह सच है कि लम्बाई, चौड़ाई, गहराई या ऊंचाई मीटरों से मापते हैं, लेकिन यह नपाई तो सीधी लकीर की होती है। अगर कोई पूछे कि आप का घर कितनी जमीन पर खड़ा है, या पूछे कि इस कमरे का फर्श कितना है, या पूछे कि इस दीवार की सतह कितनी है या पूछे कि रामू किसान के पास कितनी जमीन है, तो हम मीटरों की बजाय वर्गमीटरों में जवाब देंगे।

वर्ग मीटर क्या होता है, अरजन ने पूछा।

द्रोपी ने कहा, आओ लकड़ी की या बांस की चार पट्टियां या छड़ें लें। इन पट्टियों या छड़ों की लम्बाई एक एक मीटर होनी चाहिये। आओ अब इन का एक चौखटा बना लें।

वह कैसे? अरजन ने पूछा।

द्रोपी ने कहा, चारों छड़ों के किनारों को कीलों से जोड़ देंगे या रस्सी से बांध देंगे। लेकिन ध्यान रखना होगा कि चौखटा ढीला न रह जाए और चारों कोने बराबर-बराबर तने हुए होने चाहियें, जैसे चारपाई की पाटियां होती हैं।

फिर? अरजन ने पूछा।

फिर क्या। हो गया तैयार ज़मीन मापने का पैमाना। यह चौखटा एक वर्गमीटर होगा। चौखटे को यहां फर्श पर रखो। फर्श की जितनी सतह उस चौखटे के अन्दर घिरेगी वह एक वर्गमीटर जमीन होगी। अब इस चौखटे को उठा-उठा कर कमरे के फर्श पर आगे-आगे रखते जाओ और गिनते जाओ। जितनी बार में कमरे की सारी-की-सारी सतह इस चौखटे से घिर जाए उतने वर्गमीटर फर्श की सतह होगी।

माप कर दिखाओ, अरजन ने कहा।

द्रोपी ने कहा, पहले चार पट्टियां या चार छड़ें लाओ। कुछ कील या कुछ रस्सियां लाओ। अभी एक वर्गमीटर का चौखटा बनाते हैं।

उसके बाद अरजन और द्रोपी ने मिलकर सब सामान इकट्ठा किया। और एक मजबूत चौखटा बनाया। इस चौखटे की हर साइड एक मीटर लम्बी थी और उस के चारों कोने बराबर-बराबर तने हुए थे।

द्रोपी ने चौखटा अरजन को थमा दिया और कहा, अब तुम बताओ कि हमारे कमरे का दरवाजा कितने वर्गमीटर है?

अरजन ने चौखटे की मदद से नपाई की और कहा, यह दरवाजा लगभग दो वर्ग मीटर है।

द्रोपी ने कहा, बिल्कुल ठीक। अब चारपाई की सतह मापो।

अरजन ने चारपाई पर चौखटे को दो बार रख कर देखा और कंहा, इस चारपाई की सतह दो वर्गमीटर से कम है।

द्रोपी ने कहा, इस फर्श की लम्बाई लगभग तीन मीटर है और चौड़ाई भी लगभग तीन मीटर है। अब तुम इस चौखटे की मदद से इस फर्श की सतह मापो।

अरजन ने कहा, फर्श की सतह मापने के लिये हमें दोनों चारपाइयों, दोनों ट्रंकों और बाकी सामान को बाहर निकालना होगा। क्या फर्श की नपाई का कोई और आसान तरीका नहीं हो सकता?

द्रोपी ने कहा, इस कमरे की छत पर चले जाओ। वह खाली पड़ी है। वहां जाकर इस चौखटे की मदद से तुम इस फर्श की नपाई कर सकते हो।

अरजन ने वैसा ही किया, जैसे द्रोपी ने कहा था। नपाई के बाद छत पर से उस ने आवाज दी, द्रोपी यह सतह लगभग नौ वर्ग मीटर है।

द्रोपी ने कहा, बिल्कुल ठीक। अब तुम छत से नीचे उतर आओ।

अरजन ने कहा, नहीं, मुझे यहां छत से रामू के खेत दिखाई दे रहे हैं। क्या उनकी नपाई भी वर्गमीटरों में होती है?

द्रोपी ने कहा, हां। लेकिन अगर कोई पूछे कि रामू किसान के पास कितनी जमीन है तो बताएंगे कि उसके पास इतने हैक्टेयर जमीन है या कहेंगे कि इतने एकड़ जमीन है या कहेंगे कि इतने बीघा जमीन है।

अरजन ने पूछा, एक हैक्टेयर जमीन कितनी होती है।

द्रोपी ने कहा, 10,000 वर्ग मीटर जमीन को एक हैक्टेयर कहते हैं।

अरजन ने कहा, यानी एक हैक्टेयर जमीन में इस तरह के 10 000 चौखटे जमीन होगी। बाप-रे-बाप दस हजार! और एक एकड़ में कितनी जमीन होती है? द्रोपी ने कहा, एक एकड़ में लगभग 4120 वर्गमीटर जमीन होती है। और एक बीघे में कितनी जमीन जोती है? अरजन ने पूछा।

द्रोपी ने कहा, मुझे नहीं मालूम।

अरजन ने कहा, द्रोपी हमारे एक सवाल का जवाब दो तो जानें।

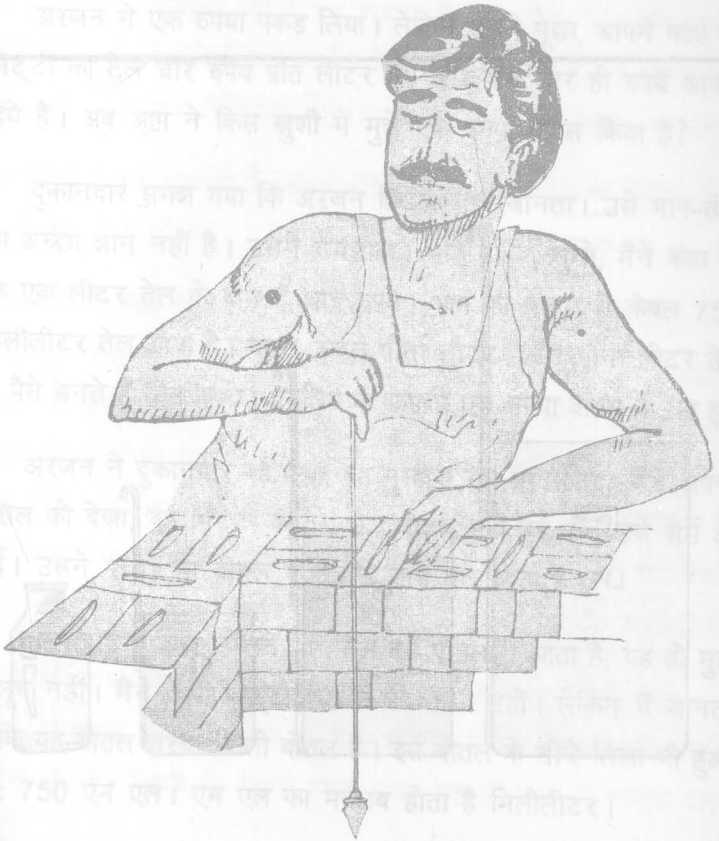
क्या? द्रोपी ने पूछा।

हमारे भारत देश की कुल कितनी भूमि है।

द्रोपी ने कहा, लगभग 33 करोड़ हैक्टेयर।

वाह! क्या इतनी सारी भूमि इसी तरह के वर्गमीटर वाले चौखटे से मापी गई है?

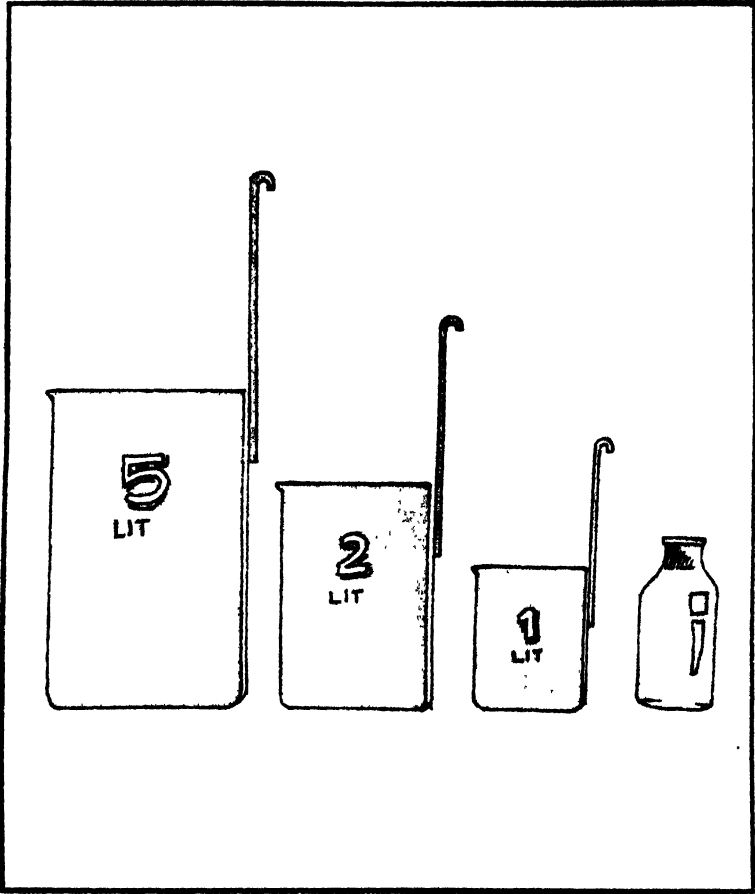
द्रोपी ने कहा, हां, इसी चौखटे वाले हिसाब से।



फिर क्या हुआ-8

मंगलवार को अरजन की छुट्टी रहती है। और आज महीने का पहला मंगलवार था। द्रोपी ने उसे मिट्टी का तेल लाने के लिए बाजार भेजा। घर में एक खाली बोतल थी, अरजन उसे अपने साथ ले गया।

अरजन ने दुकानदार से पूछा, मिट्टी का तेल किस भाव है। दुकानदार ने कहा, चार रुपये लीटर। अरजन ने कहा, यह बोतल भर दो। दुकानदार



ने बोतल लेकर उसे भर दिया। अरजन ने बोतल ले ली और दुकानदार को दो-दो रुपये के दो नोट धमा दिये। अरजन घर की तरफ चल दिया। पीछे से दुकानदार न आवाज लगाई, अरे भाई, बाकी के पैसे तो लेते जाओ।

अरजन ने लौट कर कहा, आप को शायद गलती हुई है। मैंने आप को केवल चार रुपये दिये हैं।

दुकानदार ने कहा, हां, हां। आपने चार रुपये ही दिए हैं। ये लो एक रुपया, तीन रुपये का तेल, और बाकी, एक रुपया।

अरजन ने एक रुपया पकड़ लिया। लेकिन उसने पूछा, आपने कहा था, मिट्टी का तेल चार रुपये प्रति लीटर है। और मैंने चार ही रुपये आपको दिये हैं। अब आप ने किस खुशी में मुझे एक रुपया वापस किया है?

दुकानदार समझ गया कि अरजन हिसाब नहीं जानता। उसे माप-तोल का अच्छा ज्ञान नहीं है। उसने समझाया। भाई साहब, सुनो, मैंने कहा था कि एक लीटर तेल के दाम हैं चार रुपये। आप की बोतल में केवल 750 मिलीलीटर तेल आया है। यानी, केवल पौना लीटर। और पौना लीटर तेल के पैसे बनते हैं तीन रुपये। इसलिए मैं आपको एक रुपया वापस दे रहा हूँ।

अरजन ने दुकानदार को देखा, वह मुस्करा रहा था। फिर उसने अपनी बोतल को देखा, वह मिट्टी के तेल से लबालब भरी हुई थी। उसे शर्म आ गई। उसने पूछा, इस बोतल में कितने ग्राम तेल आता है।

दुकानदार ने कहा, कितने ग्राम तेल इस बोतल में आता है, यह तो मुझे मालूम नहीं। मैंने कभी मिट्टी के तेल को तोला नहीं। लेकिन मैं जानता हूँ कि यह बोतल शरबत वाली बोतल है। इस बोतल के नीचे लिखा भी हुआ है : 750 एम एल। एम एल का मतलब होता है मिलीलीटर।

अरजन गरदन लटका कर घर आ गया। घर आकर अरजन ने सारी

कहानी द्रोपी को सुनाई। द्रोपी को बहुत हंसी आई। उसने अरजन से कहा, आज मैं तुम्हें लीटर और मिलीलीटर का हिसाब समझाऊंगी।

अरजन ने कहा, हां, समझाओ, मुझे उस दुकानदार के सामने बहुत शर्म आई। वह क्या सोचता होगा कि अरजन को इतना भी नहीं मालूम कि मिट्टी का तेल लीटरों में मापा जाता है। यह तो अच्छा हुआ कि दुकानदार भला आदमी था। अगर कोई ठग होता तो आसानी से मेरे पैसे मार लेता।

द्रोपी ने कहा, पानी, दूध, मिट्टी का तेल, पेट्रोल, डीज़ल आदि तरल वस्तुएं लीटर में मापी जाती हैं। हमारे घर में एक प्लास्टिक की बोतल है। मेरा ख्याल है एक दिन उसमें सरसों का तेल आया था। मुझे याद है उस पर लिखा था 1000 एम एल। यानी वह एक लीटर की बोतल है।

अरजन ने कहा, शायद हो। क्योंकि इसका लेबल फट गया है। और अब तो इस पर कुछ नहीं लिखा।

द्रोपी ने कहा, अभी पता चल जाएगा। हमारे घर में सोडे की एक खाली बोतल है। उसके नीचे लिखा है 250 एम एल यानी वह 250 मिलीलीटर की बोतल है। 250 मिलीलीटर एक लीटर का चौथा भाग होता है। आओ सोडे की इस बोतल को चार बार पानी से भर कर इस प्लास्टिक की बोतल में उड़ेल देते हैं। अगर चार बार में यह बोतल लबालब भर जाए और सारा पानी समा जाए तो समझो कि प्लास्टिक की बोतल एक लीटर यानी एक हजार मिलीलीटर की बोतल है।

द्रोपी और अरजन ने ऐसा ही किया। उन्होंने देखा कि प्लास्टिक की वह बोतल जिसमें कभी सरसों का तेल आया था एक लीटर की बोतल है। इसके बाद अरजन ने कहा कि हम अलग अलग समाई की बोतलें इकट्ठी करेंगे।

द्रोपी ने कहा, मैं तुम्हारी मदद करती हूँ। आओ घर में जो बोतलें हैं उन्हें एक लाइन में रखते हैं। सबसे पहले यह प्लास्टिक की बोतल एक लीटर

की। उसके बाद यह शरबत की बोतल 750 मिलीलीटर की। उसके बाद यह सोडे की बोतल 250 मिलीलीटर की। उसके बाद यह शीशी लो सौ मिलीलीटर की।

तुम्हें कैसे मालूम कि यह शीशी सौ मिलीलीटर की है अरजन ने पूछा।

मुझे मालूम है। इस शीशी में खांसी का शरबत आया था। इधर देखो इस पर लिखा भी है 100 मिली०।

अरजन ने कहा, हमारे घर में 500 मिलीलीटर की कोई बोतल नहीं।

द्रोपी ने कहा, हां, मैंने देखा है, हमारे घर में 500 मिलीलीटर यानी आधा लीटर की कोई बोतल नहीं।

अरजन ने कहा, ठीक है आज से तलाश शुरू, तुम भी नजर रखना और मैं भी निगाह रखूंगा।

देखते हैं आधा लीटर की बोतल पहले किस के हाथ लगती है।

फिर क्या हुआ-9

उस दिन द्रोपी को बुखार आ गया। पहले गले में खराश हुई। फिर नाक बहने लगी। फिर सर में दर्द होने लगा और सारा बदन टूटने लगा। शाम तक बुखार इतना बढ़ गया कि द्रोपी रो पड़ी। अरजन घबरा गया। क्या करूं क्या न करूं, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। पड़ोस में भीमा रहता था। वह द्रोपी का मुंहबोला भाई था। अरजन ने उसे बुलाया। भीमा अपनी पत्नी राधा के साथ आया। उसने सलाह दी कि डाक्टर को बुलाओ।



राधा भाभी ने भी कहा, द्रोपी पेट से है। ऐसी हालत में इस का खास ध्यान करना है। तुम डाक्टर को बुला ही लाओ।

अरजन डाक्टर को बुला लाया। डाक्टर ने आ कर गला देखा, सीने और पीठ पर कानों वाली ट्यूबें लगा कर सुना। साथ-साथ कहता रहा, लम्बी सांस लो, और लम्बी सांस लो। फिर उस ने द्रोपी के मुंह में थर्मामीटर लगाया। साथ-साथ अपनी घड़ी पर टाइम देखता गया। कुछ देर बाद उसने थर्मामीटर निकाल कर उसे पढ़ा।

अच्छी तरह जांच-पड़ताल के बाद डाक्टर ने कहा, बुखार तेज है। शायद इसे फ्लू है। तीन-चार दिन के बाद बुखार उतरेगा। मैंने दवा की गोलियां लिख दी हैं। इन्हें दवाओं की दूकान से ले आओ। जब-जब बुखार तेज हो, एक गोली दे दो। दिन में चार बार से ज्यादा नहीं। थोड़ी-थोड़ी देर बाद थर्मामीटर लगा कर बुखार देखते रहना। अगर बुखार 103 डिग्री से ऊपर चला जाए तो बरफ के ठंडे पानी की पट्टी करना। हर आधे घंटे बाद बुखार देखना। जब तक बुखार 100 डिग्री से नीचे न आ जाए पट्टी करते रहना।

अरजन ने कहा, डाक्टर साहब हमारे पास थर्मामीटर नहीं है।

डाक्टर ने कहा, जिस दुकान से दवाई लाओगे, उसके पास थर्मामीटर भी मिल जाएगा। थर्मामीटर महंगी चीज नहीं है। दस-बारह रुपये में अच्छा थर्मामीटर आ जाएगा। घर में थर्मामीटर होना चाहिए। तुम खरीद लो।

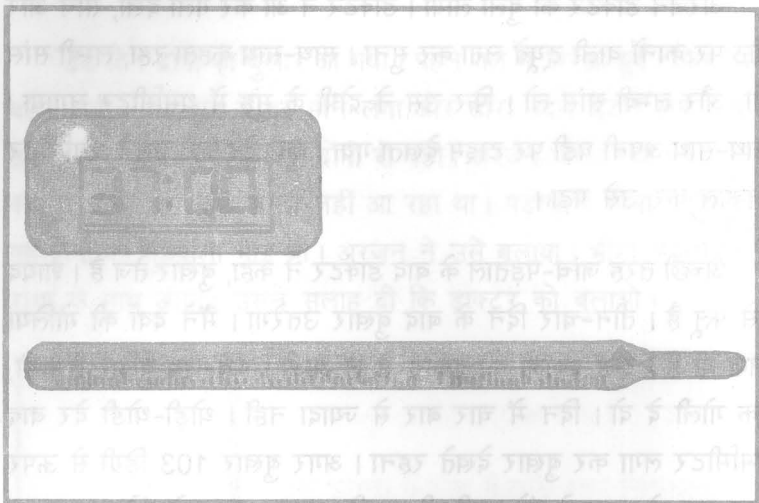
अरजन ने कहा, डाक्टर साहब थर्मामीटर कैसे लगाते हैं?

डाक्टर समझ गया कि बेचारा अरजन थर्मामीटर लगाना नहीं जानता। उसने पूछा, क्या तुम नम्बर पढ़ सकते हो?

अरजन ने कहा, हां।

डाक्टर ने अपना थर्मामीटर अरजन को दिखाया और कहा, देखो इसमें नम्बर लिखे हैं। नीचे से ऊपर की तरफ इन नम्बरों को पढ़ो।

अरजन ने पढ़ा : 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104,
105, 106, 107, 108, ।



बस, बस, डाक्टर ने कहा। फिर डाक्टर ने थर्मामीटर के अंदर एक चमकीली सी लकीर दिखाई। और कहा, यह जो चमकीली लकीर तुम्हें दिखाई दे रही है, यह पारा है, जो इस थर्मामीटर के अंदर भरा हुआ है। बुखार की गर्मी से यह पारा फैलाकर ऊपर चढ़ जाता है। जब बुखार उतर जाता है, तब यह पारा सिकुड़कर नीचे उतर जाता है।

अरजन ने थर्मामीटर के नम्बरों को फिर अच्छी तरह से पढ़ा और कहा, इस वक्त जहाँ पारे की इस लाइन का ऊपरी सिरा जहाँ है वहाँ 104 नम्बर लिखा है।

डाक्टर ने कहा, इस वक्त तुम्हारी पत्नी को 104 डिग्री बुखार है। जब तुम इसे यह दवाई दोगे और ठंडी पट्टी रखोगे तो थर्मामीटर के अंदर पारे की यह लकीर इतनी ऊंची नहीं रह जाएगी।

अरजन ने कहा, मैं समझ गया हूँ।

डाक्टर ने कहा, एक और बात समझ लो। मरीज के मुंह में थर्मामीटर डालने से पहले उसे धो लेना चाहिये। फिर जोर-जोर से उसे तीन-चार झटके दे कर छिटक लेना चाहिये। जब थर्मामीटर का पारा 96 या उससे भी नीचे डिग्री पर पहुंच जाए तब उसे मरीज के मुंह में डालना चाहिये। मरीज की जुबान के नीचे।

अरजन ने पूछा, इस थर्मामीटर को कितनी देर के लिए मरीज के मुंह में रखना होता है।

डाक्टर ने कहा, लगभग एक मिनट।

अरजन ने कहा, लेकिन हमारे पास घड़ी नहीं है।

डाक्टर ने कहा, कोई बात नहीं। थर्मामीटर मुंह में लगाने के बाद तुम एक से सौ तक की गिनती करना। जब सौ पर पहुंच जाओ तो समझ लेना कि एक मिनट हो गया है।

भीमा अब तक चुपचाप खड़ा था। और ठीक भी था। जब डाक्टर कोई बात समझा रहा हो तो बीच में नहीं बोलना चाहिये। लेकिन अब उससे नहीं रहा गया। वह आगे बढ़ा। और उसने अपनी कलाई से घड़ी उतार कर अरजन को दे दी और कहा, इसे रख लो। जब तक हमारी बहन का बुखार नहीं उतर जाता तुम इसे अपने पास रखो।

उसके बाद अरजन ने डाक्टर का धन्यवाद किया, उसे उसकी फीस दी और बड़े आदर के साथ उसे विदा किया।

इतने में भीमे की पत्नी बर्फ और पानी तथा कपड़े के दो टुकड़े ले आई। कपड़ों को बारी-बारी भिगो-भिगो कर वह द्रोपी के माथे पर, उसकी हथेलियों पर, उसकी बांहों पर रखने लगी।

अरजन और भीमा साईकल लेकर दवाई की दूकान की तरफ रवाना हुए, दवाई और थर्मामीटर लेने।

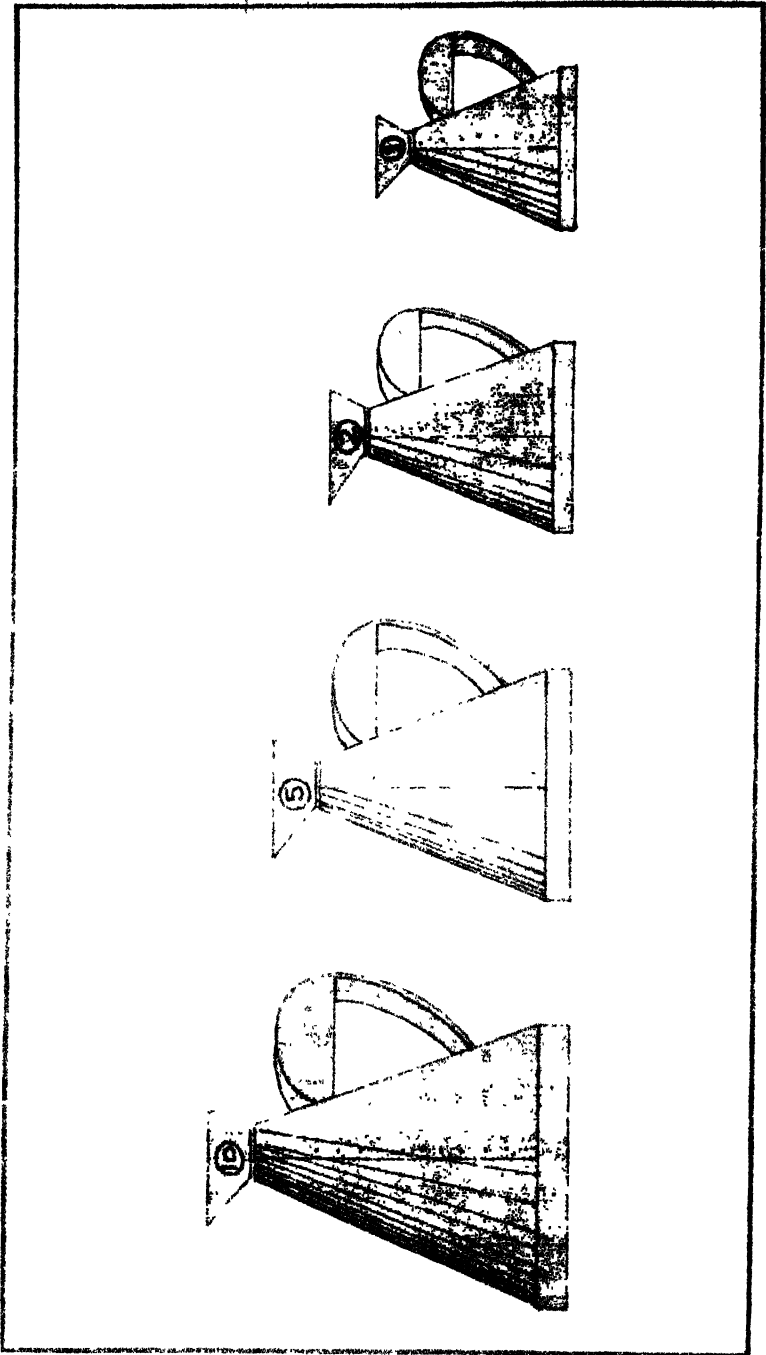
फिर क्या हुआ-10

तीन दिन लगे द्रोपी का बुखार उतरने में। इन तीन दिनों में, अरजन ने द्रोपी की बहुत सेवा की। उसने उसे सूप पिलाया और खिचड़ी बना-बना कर खिलाई। दूध पिलाया। वक्त पर दवाई दी। वह काम पर नहीं गया। द्रोपी की खाट के साथ ही खाट बिछा कर लेटा रहा। बारबार थर्मामीटर लगा कर देखता रहा। साथसाथ घड़ी की सुइयों के चक्करोँ का हिसाब करता रहा। एक सैकण्ड का वक्त कितना होता है, एक मिनट का वक्त कितना होता है और एक घंटा कितना होता है, इसका अब उसे सही-सही अंदाजा हो गया।

द्रोपी ने कहा, समय बताने की असली घड़ियाँ आकाश में लटकी हुई हैं। सूरज-चांद-सितारों को देख कर ही हमें पता लगता है कि कब से कब तक कितने साल बीत गए हैं, कितने महीने बीत गए हैं, कितने दिन और पहर बीत गए हैं, या कितने घंटे, मिनट और सैकण्ड बीत गए हैं। द्रोपी ने अरजन से कहा, आज मैं तुम्हें समय के मापन की कहानी सुनाऊंगी। सुनो : जैसे भार को ग्रमों में तोला जाता है, जैसे लम्बाई मीटरों में मापी जाती है, जैसे समाई (धारिता) लीटरों में आंकी जाती है, वैसे ही समय की बहती धारा दिनों में मापी जाती है। समय मापने का असली बांट है - दिन।

तुम पूछो, साल क्या होता है? 365 या 366 दिनों का साल होता है। तुम पूछो, महीना क्या होता है? 28, 29, 30, या 31 दिनों का महीना होता है? तुम पूछो, सप्ताह क्या होता है? सात दिनों का एक सप्ताह होता है। तुम पूछो, घंटा क्या होता है? एक दिन के चौबीसवें भाग को घंटा कहते हैं। तुम पूछो, मिनट क्या होता है? एक दिन के चौबीसवें के साठवें भाग को मिनट कहते हैं। तुम पूछो, सैकण्ड क्या होता है? एक दिन के चौबीसवें के साठवें के साठवें भाग को सैकण्ड कहते हैं।

अरजन ने कहा, तो सारा हेर-फेर दिनों का है। समय का असली बांट



दिन है। जैसे लम्बाई का असली बांट मीटर है और किलोमीटर, सेंटीमीटर तथा मिलीमीटर सब मीटर के ही गुणा-या भाग हैं। अच्छा, द्रोपी, यह बताओ एक दिन कितना होता है?

द्रोपी ने कहा, एक दिन में सारा दिन और सारी रात शामिल है। या यूँ समझ लो कि आज सुबह से अगली सुबह तक का समय एक दिन होता है। या आज दोपहर से अगली दोपहर या आज शाम से अगली शाम तक जो समय है उसे एक दिन कहते हैं।

अरजन ने कहा, द्रोपी, हमारे कारखाने में एक सूदखोर चपरासी है, वह हमेशा कहता है, आज से लेकर कल तक दो दिन होते हैं। वह यह भी कहता है, आज सोमवार से अगले सोमवार तक आठ दिन होते हैं। द्रोपी मुझे तो लगता है वह बड़ा डंडीमार है। जब भी वह दिनों का हिसाब करता है एक दिन की डंडी मार लेता है।

द्रोपी ने कहा, वह सचमुच ही डंडी मारता है, इस में कोई शक नहीं। आज से लेकर कल तक एक ही दिन होता है और सोम से अगले सोम तक सात ही दिन होते हैं। आठ नहीं।

अरजन ने कहा, द्रोपी, एक दिन कब शुरू होता है और कब समाप्त होता है, मुझे यह बताओ।

द्रोपी ने कहा, मैं ने कहीं पढ़ा था कि पुराने जमाने में, हम भारत के रहने वाले मानते थे कि सूरज के उदय होने के साथ नया दिन शुरू होता है, और अगले दिन सूरज के उदय होने से पहले खत्म होता है। पुराने वक्त में यहूदी लोग मानते थे कि नया दिन शाम को शुरू होता है और अगली शाम को खत्म होता है। भारत सरकार के कर्मचारियों की पगार का हिसाब करते वक्त दिनों की गिनती दोपहर से शुरू होती है। दोपहर के बाद नया दिन शुरू होता है।

द्रोपी ने कहा, लेकिन दोपहर से दोपहर तक दिन गिनने का हिसाब शायद और कहीं नहीं है। निजी नौकरियों में और दुनिया के बाकी सारे कारोबार में आजकल दिनों की गिनती आधी रात से आधी रात तक होती है। नया दिन रात के बारह बजे के तुरन्त बाद शुरू हो जाता है। शादीब्याह और जन्म तिथियों का हिसाब भी इसी तरह से गिना जाता है।

मान लो, हमारा बच्चा मंगलवार को रात के ग्यारह बजे पैदा होता है, तो हम कहेंगे कि वह मंगल को पैदा हुआ है। लेकिन अगर वह उसी रात 12 बजे के बाद पैदा हुआ तो हम कहेंगे कि वह बुधवार को पैदा हुआ है।

अरजन ने कहा, मैं चाहता हूँ कि हमारा बच्चा मंगलवार को पैदा न हो।

द्रोपी ने कहा, वह क्यों? मंगल के दिन पैदा होने में क्या खराबी है?

अरजन ने कहा, मंगल अच्छा नहीं होता।

द्रोपी ने कहा, हट बुद्धू। सभी वार बराबर होते हैं। कोई वार अच्छा-बुरा नहीं होता। हां, तो मैं कह रही थी, कि रात के बारह बजे तारीख बदल जाती है। रात के बारह बजे से एक सेकण्ड पहले पिछली तारीख और एक सेकण्ड बाद अगली तारीख।

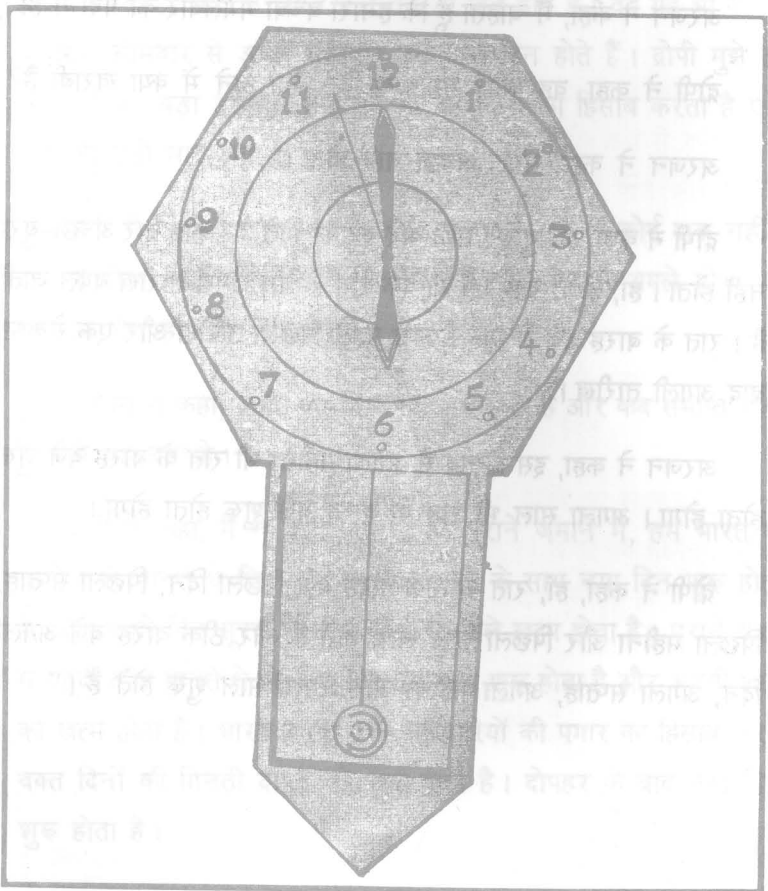
अरजन ने कहा, इस हिसाब से अगला महीना भी रात के बारह बजे शुरू होता होगा। अगला साल भी रात के बारह बजे शुरू होता होगा।

द्रोपी ने कहा, हां, रात के ठीक बारह बजे पिछला दिन, पिछला सप्ताह, पिछला महीना और पिछला साल खत्म होते हैं और ठीक बारह बजे अगला दिन, अगला सप्ताह, अगला महीना और अगला साल शुरू होते हैं।

फिर क्या हुआ-11

द्रोणी ने कहा, जैसे मीटर को सौ बराबर-बराबर भागों में बांटा गया है और एक भाग को सेंटीमीटर कहते हैं, वैसे ही एक दिन को चौबीस बराबर-बराबर हिस्सों में बांटा गया है और एक हिस्से को घंटा कहते हैं। अर्थात् एक दिन में चौबीस घंटे होते हैं।

अरजन ने कहा, ग्राम-किलो में दस का पहाड़ा चलता है। मीटर-सेंटीमीटर



में भी दस का पहाड़ा चलता है। लीटर-मिलीलीटर में भी दस का पहाड़ा चलता है। दिन-घंटे-मिनट में दस का पहाड़ा क्यों नहीं चलता? अगर एक दिन में 10 घंटे होते, एक घंटे में 100 मिनट होते और एक मिनट में 100 सेकण्ड होते, तो हिसाब आसान हो जाता।

द्रोपी ने कहा, हां, अरजन, तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक है। कई और लोग भी मांग कर रहे हैं कि दिन, घंटे, मिनट में भी दस या सौ का पहाड़ा होना चाहिये। लेकिन अभी यह मांग मानी नहीं गई है। हो सकता है, एक दिन यह बात मान ली जाए। लेकिन जब तक तुम्हारी सलाह नहीं मान ली जाती तुम्हें याद रखना होगा कि एक दिन में चौबीस घंटे होते हैं, एक घंटे में साठ मिनट और एक मिनट में साठ सेकण्ड। इसी हिसाब से घड़ियां बनी हुई हैं। सारी दुनिया इसी हिसाब को मानती है।

रात को जब हम सो रहे होते हैं तो बारह बजते हैं। नया दिन शुरू होता है। उसके एक घंटा बाद एक बजता है। फिर दो, फिर तीन और चार, पांच, जब तक हम सो कर उठते हैं तब तक छः बज गए होते हैं।

अरजन ने कहा, मैं भी छः बजे उठ जाता हूँ। लेकिन छुट्टी वाले दिन मैं सात बजे तक सोता रहता हूँ।

द्रोपी ने कहा, मैं तो हर रोज छः बजे उठ जाती हूँ, चाहे छुट्टी हो, चाहे न हो।

अरजन ने पूछा, क्या तुम सर्दियों में भी छः बजे उठती हो? सर्दियों में तो छः बजे अंधेरा होता है।

द्रोपी ने कहा, चाहे सर्दियां हों चाहे गर्मियां मुझे तो छः बजे उठना पड़ता है। उठकर नहाना धोना होता है, तुम्हारे लिए नाश्ता बनाना होता है। यह सब आठ बजे से पहले-पहले। अरजन, लंच के लिए तुम्हारी छुट्टी किस वक्त होती है

अरजन ने कहा, मेरी एक बजे लंच की छुट्टी होती है। केवल आधा

घंटा के लिए। उस में पांच मिनट तो हाथ-मुंह धोने में निकल जाते हैं। बाकी पच्चीस मिनट में जल्दी-जल्दी रोटी निगलनी पड़ती है।

इधर आखिरी निवाला मुंह में डाला उधर डेढ बजे की घंटी बज जाती है। और फिर टनाटन काम।

द्रोपी ने कहा, अरजन, तुम्हारी ड्यूटी बड़ी सख्त है।

अरजन ने कहा, इसीलिए तो मैं हिसाब सीख रहा हूँ। जब मैं पढ-लिख जाऊंगा तब कारीगर बन जाऊंगा। पढे-लिखे कारीगर को पगार भी ज्यादा मिलती है। द्रोपी, तू किस वक्त खाना खाती है।

द्रोपी ने कहा, मैं बारह बजे खाना खा लेती हूँ।

अरजन ने कहा, एक दिन में दो बार बारह बजते हैं, दो बार एक बजता है, दो बार दो बजते हैं। सब कुछ दो बार बजते हैं। यह बेमतलब का झमेला है। जिन पंचों ने यह हिसाब बनाया है उन्होंने ठीक नहीं बनाया।

द्रोपी ने पूछा, अगर ऐसा नहीं करते तो कैसा करते?

अरजन ने कहा, दोपहर के बारह के बाद तेरह, तेरह के बाद चौदह और इसी तरह चौबीस तक बजने चाहिये। मुझे लगता है, जिन पंचों ने बारह तक का हिसाब बनाया था उन्हें बारह से आगे की गिनती नहीं आती होगी।

द्रोपी ने कहा, हो सकता है, जिन्होंने पहली-पहली घड़ियां बनाई थीं, उन्हें एक गोल चक्कर में चौबीस संख्याएं लिखने में मुश्किल आई होगी। अरजन, अगर तुम हिसाब में इतना ही तेज हो गए हो कि पंचों की गलतियां निकालते है, तो मैं सवाल पूछती हूँ तुम जवाब दो।

अरजन ने उछल कर कहा, पूछो।

द्रोपी : सुबह आठ से शाम के छः बजे तक कितना वक्त होता है?

अरजन : आठ से बारह तक, चार घंटे, और बारह से छः तक, छः घंटे ।
यानी कुल मिलाकर दस घंटे ।

द्रोपी : ठीक । अब बताओ सुबह पांच से शाम के पांच बजे तक कितने घंटे?

अरजन : यह तो आसान है । बारह घंटे ।

द्रोपी अब बताओ, सुबह सात से शाम आठ तक कितने घंटे?

अरजन : सात से सात तक बारह घंटे और उसके बाद एक घंटा और कुल मिलाकर तेरह घंटे ।

द्रोपी : अच्छा, अब मुश्किल सवाल पूछूंगी । साढ़े तीन बजे से आठ बजे तक कितने घंटे?

अरजन : तीन से आठ तक पांच घंटे । उस में से आधा घंटा निकाल दिया । बाकी साढ़े चार घंटे ।

द्रोपी : बिल्कुल ठीक । चलो आज की छुट्टी । अरजन तुम बहुत होशियार हो गए हो ।

यह डिस्क एक घूर्णनशील सिंक्रोमिटर (सी.आर.ए.क) का हिस्सा है जो ठाठ से चलती है।
 पच्चीस मिनट में चल्दी-चल्दी रोटी निकलती। (सी.आर.ए.क) का काम है।

दोनी ने कहा, अरजत, तुम्हें हमारी मशीन दिखाने का समय है।

अरजत ने कहा, मैंने अभी तक मशीन नहीं देखी है। मैंने सिर्फ
 नाम ही सुना है। मैंने सोचा कि यह मशीन बहुत महंगी होगी।
 मैंने सोचा कि यह मशीन बहुत बड़ी होगी। मैंने सोचा कि यह मशीन
 बहुत जटिल होगी। मैंने सोचा कि यह मशीन बहुत खतरनाक होगी।

दोनी ने कहा, मैं बाहर बसे खाना

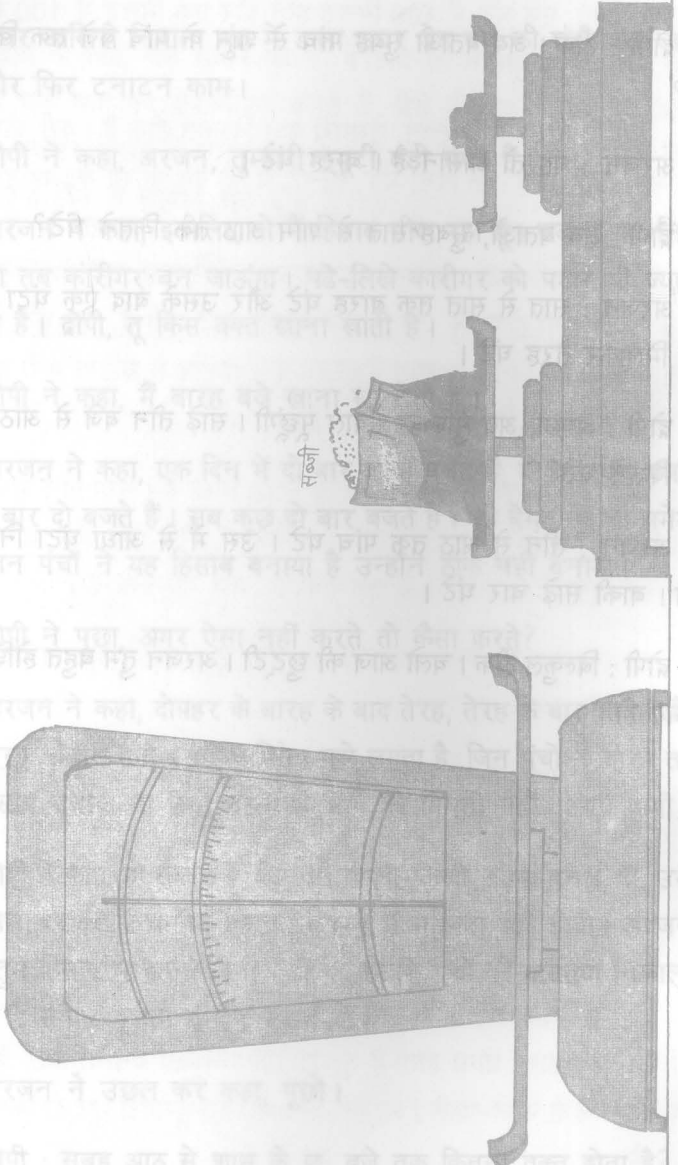
अरजत ने कहा, एक दिन मैं

दोनी ने पूछा, अगर ऐसा नहीं करते तो क्या करते

अरजत ने कहा, दोसहर के बाद के बाद तेरह, तेरह

अरजत ने उछल कर कहा, मुझे।

दोनी : सुबह आठ से शाम के छह बजे तक कितना बक्त होता है



फिर क्या हुआ-12

अरे, हम यह तो बताना भूल ही गए की जिस दिन डाक्टर आया था उससे अगले दिन सुबह-सुबह भीमे की पत्नी आई। उसने अरजन से कहा, द्रोपी को खाने के लिए सूप देना है। सूप के लिए सब्जियां चाहिये। जाकर बाजार से सब्जियां ले आओ।

अरजन ने पूछा, क्या-क्या लाना है, कितना-कितना लाना है, यह बता दो।

भीमे की पत्नी ने कहा, सौ ग्रम गाजर, सौ ग्रम टमाटर, सौ ग्रम मटर, सौ ग्रम पालक और सौ ग्रम गोभी यानी कुल मिलाकर पांच सौ ग्रम सब्जियां। यानी कुल वजन आधा किलो।

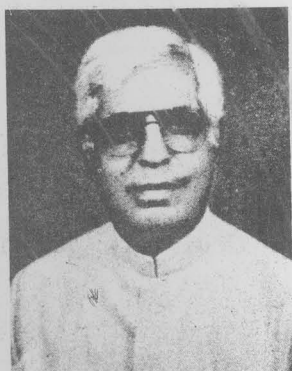
अरजन ने कहा, ठीक है मैं आधा किलो सब्जियां ले आऊंगा। पांच सब्जियां एक-एक सौ ग्रम। यह हिसाब तो बड़ा आसान है। लेकिन, भाभी तुम ने यह हिसाब कहां से सीखा?

राधा ने कहा, हमें माप-तोल का हिसाब भीमे ने सिखाया है।

अरजन ने कहा, वाह यह तो बड़े मजे की बात है। कोई अपनी बीवी से सीखता है कोई अपनी बीवी को सिखाता है। हर घर का अपना-अपना रिवाज है। जैसे जिस की जरूरत, वैसी उसकी पढ़ाई-लिखाई का प्रबन्ध। लेकिन अगर पति-पत्नी दोनों ही अनपढ़ हों तो।

तो पड़ोसी किस काम आएंगे, भीमे की पत्नी राधा और द्रोपी ने एक ही स्वर में कहा।

हां, यह तो ठीक है, अरजन ने भी हामी भरी।



बलदेव राज दावर

पश्चिमी पंजाब के एक सुदूर गांव में 1931 में जन्म। 1947, में बेघर हुए। मेहनत - मजदूरी से पेट पाला और एम ए तक की पढ़ाई की। 1959 में शादी हुई। उसी साल संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से एक अच्छी नौकरी मिली, जो कई बार विदेश ले गई। तीन बच्चे हुए, जिन्होंने बड़े होकर पिता को साइंस पढ़ाई और विज्ञान धर्म की दीक्षा दी। 1983 में 'विज्ञान गीता' की रचना की; प्रसिद्धि मिली। सन् 1989 में सरकारी सेवा से छुट्टी पाई और साइंस के प्रचार में जुट गए।

- प्रकाशित रचनाएं : विज्ञान गीता, डाक्टर सुषेन, काला दूध, जानो और बूझो, कहानी माप-तोल की।
- विदेशी प्रवास : तीन - तीन साल के लिए अफगानिस्तान, पोलैंड, बैल्जियम, मलेशिया और मैदागास्कर।
- पता : ई-610, मयूर विहार - II, दिल्ली - 110 091